अध्याय 15

छुटकारे के लिए स्तुति और खारा पानी मीठा किया गया

अध्याय 15 में यहोवा द्वारा लाल समुद्र में से होकर छुड़ाए जाने के बाद, मूसा और इस्राएलियों द्वारा गाया गया गीत दिया गया है (15:1-21)। यहाँ पर जंगल की उनकी यात्रा के आरंभिक अनुभव भी दिए गए हैं (15:22-27)।

मूसा और इस्राएलियों ने गीत द्वारा यहोवा की स्तुति की - जो और जैसा वह है, और जो उसने मिस्री सेना को समुद्र में नाश करने के द्वारा किया। इस गीत में यहोवा को इस्राएल के बल, भजन, और उद्धार के रूप में प्रदर्शित किया गया है (15:2); वह अद्‌भुत पराक्रम वाला योद्धा है, जो अपने कोप से अपने को शत्रुओं गिरा कर चकनाचूर कर देता है (15:3, 6, 7)। इसके अतिरिक्त वह सभी देवताओं की ऊपर परमेश्वर, “पवित्रता के कारण महाप्रतापी,” और अद्‌भुत काम करने वाला है (15:11)।

उसने मिस्रियों को समुद्र में नाश किया (15:1); वे उसकी गहराइयों में डूब गए (15:4, 5)। अपनी विजय प्राप्त करने के लिए, उसने जल को एकत्रित किया और शत्रुओं को जल में ढाँप देने के लिए पवन का प्रयोग किया (15:8-11)।

यहोवा वही है जो अपनी करुणा में अपने लोगों को अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है (15:13)। आस-पास के लोग - पलिश्ती, एदोमी, मोआबी, और कनानी - मिस्री सेना के विनाश की बात सुनेंगे, और वे यहोवा का भय मानेंगे (15:14-16)। परिणामस्वरूप, इस्राएल वाचा के देश में बसने पाएगा (15:16, 17)। गीत का अन्त आराधना के साथ होता है (15:18)। हाल ही की घटनाओं के संक्षिप्त सारांश के बाद (15:19), लेख में जोड़ा गया है कि मरियम तथा स्त्रियों ने नाचते हुए ऐसे ही गीत गए (15:20, 21)।

सीनै के लिए यात्रा आरंभ होती है। इस्राएली शूर के जंगल में मारा नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ का पानी पीने के लिए बहुत खारा था (15:22, 23)। परिणामस्वरूप उन्होंने मूसा से शिकायत की। यहोवा से निर्देश पाकर, उसने पानी में एक पौधा फेंका और पानी मीठा हो गया (15:24, 25)। परमेश्वर ने फिर वे शर्तें बताईं जिनके अन्तर्गत वह उनके साथ वाचा बांधेगा (15:25, 26)। अध्याय का अन्त इस कथन के साथ होता है कि इस्राएल एलिम नामक स्थान को आया, जहाँ भोजन और पानी की भरपूरी थी (15:27)।

इस्राएलियों का उल्लास (15:1-21)

मूसा और इस्राएल की सन्तान उल्लास (15:1-19)

जो गीत मूसा और इस्राएलियों ने गाया वह समुद्र में हुए आश्चर्यकर्म का, दो गद्य विवरणों के मध्य दिया गया काव्यात्मक विवरण है (14:13-31; 15:19)। इस कविता को यहूदी मत में *शिरत-हा-याम* "समुद्र का गीत" कहते हैं, इसने "शीघ्र ही यहूदी आराधना-विधि में विशेष स्थान बना लिया," और अंततः यहूदी आराधनालयों की निर्धारित प्रातः आराधना में सम्मिलित हो गई।[1] इस गीत की भाषा की प्राचीन विशेषताओं के कारण विद्वानों का यह मानना है कि "संभवतः इब्रानी बाइबल में यह निरंतर बनी हुई प्राचीनतम पद्य का भाग हो सकता है।"[2] परन्तु उसके प्राचीन स्वरूप से निश्चित रीति से यह प्रमाणित नहीं होता है कि यह कविता उस वृतांत से पहले लिखी गई थी जिसका यह भाग है क्योंकि कविताओं में बहुधा प्राचीन स्वरूप तथा भाषा का प्रयोग होता है।

कविता का ढाँचे से - इस तथ्य के साथ कि "मूसा और इस्राएल की सन्तान" ने यह गीत गाया था - यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि इस भजन को बारी-बारी से दो समूहों द्वारा गाया जाता था। परन्तु इस बारी-बारी गाए जाने पर कोई सहमति नहीं है।[3] सब इस बात पर सहमत हैं कि यह गीत बहुत वाक्पटुता के साथ उस आराधना को व्यक्त करता है जिसका इस्राएल ने अपने छुटकारे के पश्चात अनुभव किया होगा। नहूम एम. सारना का कहना है कि यह गीत "परमेश्वर के प्रति आराधना का जयगीत है, बाइबल की कृतज्ञता व्यक्त करने की विधि। यह किसी महाकाव्य का वृतांत नहीं है परन्तु निर्गमन की महान घटनाओं को अनुभव करने वाले लोगों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक स्वाभाविक, भावात्मक रूप है।"[4] जिस विशिष्ट उच्च आदर के साथ विद्वान इस कविता को देखते हैं, उसी भाव में एस. आर. ड्राइवर की यह श्रद्धांजलि है: "विजय का यह काव्य [15:1-18] इब्रानी पद्य के सर्वोत्तम में से एक है, कविता की उल्लेखनीय ज्वाला और आत्मा, वर्णन में सजीव चित्रण, जीवंत कल्पना, द्रुत गति, प्रभावी समानांतरता, और उज्ज्वल मधुर ... पद-रचना।"[5]

इस परिच्छेद को समझाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है कि पिछले अध्यायों के असमान, इन पदों को कविता के जैसे लिखा गया है और उनकी व्याख्या भी वैसे ही होनी चाहिए। इन परिच्छेदों का काव्य स्वरूप होने का अर्थ है कि, एक तो, इनमें गद्य से अधिक अलंकार होंगे।

इसके अतिरिक्त, लेख के ढाँचे का बहुत सावधानी से ध्यान रखा जाना चाहिए। इस गीत को दो छंदों में विभाजित किया जा सकता है।[6] पहला छंद (15:1-12) में परमेश्वर की स्तुति उसकी हस्ती के लिए और उसकी स्तुति जो उसने इस्राएल के लिए किया है में एकांतर है :

प्रस्तावना (15:1): यहोवा महाप्रतापी ठहरा है क्योंकि उसने घोड़ों समेत सवारों को समुद्र में डाल दिया है।

परमेश्वर की हस्ती के लिए उसकी स्तुति (15:2, 3): वह मेरा बल, भजन, और मेरा उद्धार है। मेरा ईश्वर वही है और योद्धा भी।

परमेश्वर ने जो किया उसके लिए उसकी स्तुति (15:4, 5): उसने फ़िरौन के रथों और सेना को समुद्र में डाल दिया।

परमेश्वर की हस्ती के लिए उसकी स्तुति (15:6, 7): वह महाप्रतापी है, अपने शत्रुओं को गिराकर चकनाचूर कर देता है।

परमेश्वर ने जो किया उसके लिए उसकी स्तुति (15:8-10): उसने जल और पवन को फ़िरौन की सेना को पराजित करने के लिए प्रयोग किया।

परमेश्वर की हस्ती के लिए उसकी स्तुति (15:11): वह सब देवताओं से बढ़कर है, पवित्रता में महाप्रतापी, आश्चर्यकर्म करने वाला है।

परमेश्वर ने जो किया उसके लिए उसकी स्तुति (15:12): उसके कहने पर पृथ्वी ने उसके शत्रुओं को निगल लिया, और वह अपनी प्रजा को अपने पवित्र निवास स्थान को लाया।

दूसरा छंद (15:13-18) परमेश्वर के किए कार्यों के परिणामों पर बल देता है:

इस्राएल के लिए परिणाम (15:13): वे परमेश्वर के पवित्र निवास स्थान को ले जाए जाएँगे।

राष्ट्रों के लिए परिणाम (15:14-16): पलिश्ती, एदोमी, मोआबी, और कनानी डरेंगे।

इस्राएल के लिए परिणाम (15:17): वे परमेश्वर द्वारा चुने गए स्थान में बसाए जाएँगे।

समापन (15:18): यहोवा की सदा सर्वदा स्तुति होती रहे।

यह कविता साहित्यिक कौशल का प्रभावी एकल कार्य है। इसलिए हमारे पास यह सोचने का कोई कारण नहीं है, कि यह कुछ कविताओं का संयोजन है जो निर्गमन के बहुत बाद किया गया, जैसा कि कुछ विद्वान कहते हैं।[7]

परिचय (15:1)

[1]तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। ...

आयत 1. परमेश्वर के छुटकारे का पर्व मनाने का मंच तैयार करने के साथ इस अध्याय आरम्भ होता है। पाठ्य, पाठक को वहाँ की घटना के विषय में मूल सच्चाई की सूचना प्रदान करता है। (1) *यह कब हुआ?* **तब**, अर्थात, समुद्र के द्वारा छुटकारे के बाद जिसका रिकॉर्ड अध्याय 14 में देखने को मिलता है। (2) *इसमें कौन-कौन शामिल थे?* **मूसा और इस्राएल के पुत्र।** बाद में, मरियम और सब स्त्रियों ने इसके लिए आनन्द मनाते हुए गीत की टेक लगाई (15:20, 21)। (3) *उन्होंने क्या किया?* उन्होंने **यह गीत गाया**, जिसके शब्द 15:1-18 में देखे जा सकते हैं। (4) *इस उत्सव में किसे आदर दिया गया?* **यहोवा को**, जिसके लिए उन्होंने यह गीत गाया।

नहूम एम. सर्ना ने यह बताया कि इस भजन में एक गद्य परिचय है और यह “विजय को संक्षिप्त में बताते हुए अन्य गद्य कथन के साथ” समाप्त करता है (15:19)। इस प्रकार की शैली अथवा साहित्य के प्रकार - “विजय को ऊँचा उठाते हुए प्रशंसा से भरे भजन के साथ गद्य के वर्णन का मेल” - करने के लिए बाइबल विषयक पहला उदाहरण उपलब्ध करवाते हैं। अन्य उदाहरण दबोरा के गीत के द्वारा उपलब्ध करवाया गए हैं (न्यायियों 4; 5)।[8]

मूसा का गीत इस सच्चाई को रेखांकित करता है कि सामान्य रुप से आराधना करना और विशेष रुप में गीत में स्तुति, सदैव बचा लिए जाने के प्रति एक सही प्रत्युत्तर है। इसे पुराना और नया नियम में अन्य पदों में देखा जा सकता है (भजन 98:1-5; 149:1-4; प्रेरितों 16:25; रोमियों 15:9; इफ़ि. 5:18-20; कुलु. 3:16; इब्रा. 13:15; प्रका. 15:3)।

पहला छन्द (15:1-12)

1... उन्होंने कहा “मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा
है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में पटक दिया है। 2यहोवा मेरा बल और
भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा परमेश्वर वही है, मैं
उसी की स्तुति करूँगा, (मैं उसके लिये निवास-स्थान बनाऊँगा), मेरे पूर्वजों का
परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूँगा। 3यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है।
4फ़िरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया; और उसके उत्तम से उत्तम
रथी लाल समुद्र में डूब गए। 5गहिरे जल ने उन्हें ढाँप लिया; वे पत्थर के समान
गहिरे स्थानों में डूब गए। 6हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ;
हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है। 7तू अपने विरोधियों
को अपने महाप्रताप से गिरा देता है; तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे के समान
भस्म हो जाते हैं; 8तेरे नथनों की साँस से जल एकत्र हो गया, धाराएँ ढेर के समान
थम गईं; समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया। 9शत्रु ने कहा था, ‘मैं पीछा करूँगा,
मैं जा पकड़ूँगा, मैं लूट के माल को बाँट लूँगा, उनसे मेरा जी भर जाएगा। मैं अपनी
तलवार खींचते ही अपने हाथ से उनको नष्ट कर डालूँगा।’ 10तू ने अपने श्वास का
पवन चलाया, तब समुद्र ने उनको ढाँप लिया; वे महाजलराशि में सीसे के समान
डूब गए। 11हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तो पवित्रता के कारण

महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य, और आश्चर्यकर्म का कर्ता है। [12]तू ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने उनको निगल लिया है।"

आयत 1. इस बिन्दु पर गीत की विषय-वस्तु का परिचय दिया गया है: जो कुछ **यहोवा** ने किया है उसके लिए उसकी स्तुति हो। वह **महाप्रतापी** ठहरा है क्योंकि **उसने घोड़ों समेत सवारों को समुद्र में पटक दिया है**। यहाँ पर दी गई भाषा, क्योंकि, आलंकारिक है इसलिए पाठक बिल्कुल ठीक वैसे की अपेक्षा न करें। जैसा कि वहाँ पर कविता रथों के स्थान पर घोड़ों समेत सवारों के विषय में कहती है तो इसका अर्थ नहीं है कि उस समय वहाँ पर कोई रथ नहीं थे। वास्तव में कविता बाद में कहती है कि रथों और सेना नष्ट हो गए (15:4), और उस घटना का गद्य विवरण घोड़ों के साथ-साथ रथों के बारे में बताता है (15:19)।

कविता का कथन कि यहोवा ने सवारों को समुद्र में **पटक दिया** है पिछले अध्याय में उनके डूबने के बारे में देखे जाने वाले विवरण के साथ अन्तर नहीं रखता। अगर मूसा ने समुद्र को वापस एक जैसा करते हुए उसके जल को वापस लौटाते हुए रथों को वास्तव में डुबो दिया तो वह क्यों कहता है कि परमेश्वर ने घोड़ों समेत सवारों को समुद्र में "पटक दिया है?" इसका उत्तर मात्र यही है कि वह काव्य रुप में बोल रहा था। "घोड़ों समेत सवारों" और "पटक दिया है," जैसे शब्द परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को छुड़ाने की सच्चाई के प्रति भावनाओं को प्रकट करने के लिए अधिक प्रबल और प्रभाव को बताते हैं। इस अध्याय में समुद्र में मिस्रियों के विनाश के बारे में पाठ्य अनेक तरीकों से बताता है:

यहोवा ने घोड़े समेत सवार को पटक दिया (15:1)।

यहोवा ने फ़िरौन के रथों और सेना को समुद्र में फेंक दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी को लाल समुद्र में डूबो दिया (15:4)।

यहोवा ने अपने श्वास का पवन चलाया, तब समुद्र ने उनको ढाँप लिया; वे महाजलराशि में सीसे के समान डूब गए (15:10)।

यहोवा ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने उनको निगल लिया है (15:12)।

इसी घटना के बारे में इस्राएली लोग चारों आयतों में गा रहे थे; कविता की आलंकारिक भाषा के प्रयोग ने उस घटना के बारे में चार तरीकों से बताने के लिए स्वीकृति दी।

आयतें 2, 3. ये आयतें *इस बात के लिए उसकी स्तुति करती हैं कि वह कौन है।* कवि ने यहोवा के व्यक्तित्व के चित्र की पहली किश्त यहाँ पर उपलब्ध करवाई। दिया गया प्रत्येक विवरण, परमेश्वर के बारे में पाठक की समझ में कुछ और अधिक जानकारी जोड़ता दिखाई देता है। विश्वासी व्यक्ति के **बल** के रूप में यहोवा अपने लोगों के लिए रक्षक और बल का स्रोत है। उसके **भजन** के अनुसार यहोवा आराधना

का स्त्रोत है (वह परमेश्वर जो अपने लोगों के लिए यह सम्भव करता है कि वे गा सकें) और आराधना का उद्देश्य है (वह परमेश्वर जो उस स्तुति को स्वीकार करता है जो उसके लोग उसे चढ़ाते हैं)।

आगे, कवि ने परमेश्वर का वर्णन अपने **उद्धार** के रुप में किया, बिना किसी सन्देह के उसने उस उद्धार का संकेत दिया जिसका अनुभव अभी-अभी इस्राएली लोगों ने मिस्र से स्वतन्त्रता प्राप्त करते हुए किया। उसने यह दावा किया कि यहोवा उसका **परमेश्वर** है, यहाँ तक कि, जैसा वह उसके **पिता का परमेश्वर** था (देखें 3:6; 18:4)। इसका अर्थ यह है कि कवि और इस्राएलियों का परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध था और वे इस बात के लिए मजबूर थे और उन्हें यह आशीष मिली थी कि उसकी आराधना करें।

सम्भावित रुप से इन आयतों में बहुत ही लुभावना विवरण यह है कि यहोवा एक **योद्धा** के समान है - अथवा और भी शाब्दिक रुप से, "योद्धा" (KJV) है। परमेश्वर को एक योद्धा के रुप में चित्रित किया गया है जो अपने शत्रुओं के विरोध में लड़ने के लिए जाता है (देखें 14:14, 25; व्यव. 1:30; यशा. 42:13; यिर्म. 20:11)। यह पूरा गीत युद्ध में परमेश्वर की जीत का उत्सव मनाता है। यहोवा, एक "योद्धा" के रुप में है, "एक ऐसा दृष्टिकोण है जो पूरे पुराना नियम में और यहाँ तक कि नया नियम में भी महत्वपूर्ण बना रहता है। यह शमूएल की पुस्तक में विशेष रुप से देखा जा सकता है। 'सेनाओं का यहोवा' नामक शीर्षक समान रुप से देखने को मिलता है।"[9]

जैसे ही कवि ने अपने गीत का यह भाग पूरा किया, उसने कहा, **"उसका नाम** [यहोवा] **है।"** कवि मात्र गुणों की सूची के साथ अपने परमेश्वर की पहचान नहीं कर रहा था; इसके स्थान पर, वह यह वर्णन कर रहा था कि यहोवा होने का अर्थ क्या है। यहोवा को "जानने" का अर्थ है कि इन सब तरीकों से उसे समझ लेना।

आयतें 4, 5. *यहोवा ने जो कुछ किया है उसके लिए* ये आयतें *यहोवा की स्तुति करती हैं।* यहाँ पर कविता में पहली बात फ़िरौन की सेना के विनाश का वर्णन दिया गया है। ये आयतें पहले, विनाश के विस्तार पर बल देती हैं: यह **फ़िरौन के रथों और सेना और उसके उत्तम से उत्तम रथी** को शामिल करती है। दूसरा, ये विनाश के स्थान और तरीके पर बल देती हैं: यह **लाल सागर में** हुआ जिसमें मिस्रियों को **डाल** दिया गया। पाठक, समुद्र में रथों और सवारों के ऊपर जल पलटने की कल्पना कर सकते हैं। मिस्री जहाँ पर डूबे वहाँ पर **वे पत्थर के समान गहिरे स्थानों में डूब गए** (देखें 14:28; यिर्म. 51:63, 64)।

आयतें 6, 7. ये आयतें फ़िर से *यहोवा की स्तुति करती हैं कि वह कौन है।* यह गीत **यहोवा के** स्वभाव के कारण उसकी स्तुति के लिए एक कारण की ओर लौट आता है। इन आयतों में जो चरित्र विशेषताएँ बताई गई हैं वे हैं परमेश्वर की ताकत और उसका न्याय। जैसा कि **वह शक्ति में महाप्रतापी** है, कोई भी जन उसकी ताकत का सामना नहीं कर सकता - यहाँ तक कि संसार की कोई बड़ी फ़ौज भी नहीं। फ़िर, परमेश्वर न्यायी है और अपने शत्रुओं को बिना दण्ड दिए नहीं जाने देता। वह **शत्रु को चकनाचूर कर देता है** और **अपने विरोधियों को ... गिरा देता है,** और वह

अपना **कोप भड़काता, और वे भूसे के समान भस्म हो जाते हैं**। इस तुलना में "भूसा" (קַשׁ, *काश)* शब्द, और "चारा" (NIV), उस भारी पुआल का संकेत देते हैं जिसे फटकारने की प्रक्रिया में हवा के द्वारा भी लेकर नहीं जाया जाता; प्रायः इसे एकत्रित किया जाता और आग में जला दिया जाता था (यशा. 5:24; योएल 2:5; मलाकी 4:1; मत्ती 3:12)। जैसा कि परमेश्वर इस पृथ्वी पर सर्वोच्च है, उसके शत्रुओं को नष्ट करने का अधिकार उसके पास है।[10] वास्तव में, अगर वह ऐसा नहीं करता है तो वह न्यायी परमेश्वर नहीं है।

आयतें 8-10. ये तीन आयतें *यहोवा ने जो किया है उसके लिए उसकी स्तुति करने* की ओर लौटती है। समुद्र में फ़िरौन की सेना के नष्ट होने के साथ ही मिस्रियों पर परमेश्वर के कोप भड़कने के विवरण में ये जोड़ का काम करती हैं (15:4, 5)। पाठ्य, काव्य रुप से उनके विनाश में समुद्र की भूमिका का वर्णन करता है। यहोवा ने **अपने नथनों की साँस से जल को एकत्रित कर दिया** (देखें 14:29)। लहरों को देखने वाले एक दर्शक को वें लगभग कठोर लगेंगी अथवा ऐसी लगेंगी मानो **समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया** हो। फ़िरौन के लोगों ने इस्राएलियों को पकड़ने का,[11] और उनके सामानों को लूटने का निश्चय किया (**"मैं लूट के माल को बाँट लूँगा"**) और उन्हें **नष्ट कर डालने** का निश्चय किया। फ़िर भी यहोवा ने अपने श्वास का **पवन** (רוּחַ, *रुआख)* अथवा "साँस" (NIV) चलाने के द्वारा अपने शत्रुओं को हरा दिया। समुद्र में मिस्रियों का **सीसे** के समान डूबना, आयत 5 में "पत्थर" के डूबने के साथ समान है।

"नथनों" और "साँस" की कल्पना, परमेश्वर के मानवीय शब्दों (अवतारवाद) के उदाहरण हैं। गीत में अन्य उदाहरण परमेश्वर को एक "योद्धा" (15:3) के रुप में बताते हैं, साथ ही उसके "दाहिने हाथ" (15:6, 12), "हाथ" (15:17), और "बाँह" (15:16) के सन्दर्भ देखे जा सकते हैं। इस प्रकार के प्रबल प्रकटीकरण मनुष्य को परमेश्वर के साथ जुड़ने के लिए सहायता देते हैं, जो कि शुद्ध रुप से एक आत्मिक जन है।

आयत 11. यहोवा के वर्णन का शिखर इस आयत में ऊँचाई पर पहुँचता है, जो, *यहोवा ने जो किया है उसके लिए यह आयत उसकी स्तुति करती* है। यह गीत यह प्रमाणित करता है कि राष्ट्रों के ईश्वरों में परमेश्वर के सम्मुख कोई खड़ा नहीं रह सकता। प्रश्न, **"हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है?"** इसलिए रखा गया है कि इसका उत्तर इस प्रकार दिया जा सके, "कोई नहीं!" यह सच्चाई कि परमेश्वर अद्भुत है और मानव के बनाए हुए ईश्वरों से बिल्कुल अलग है, पुराना नियम में इस पर विशेष बल दिया गया है।

यह आयत तीन तरीके बताती है जिसमें यहोवा के समान और कोई नहीं है। (1) भव्य **पवित्रता** में उसके समान कोई नहीं है। जो लोग अन्य देवताओं की उपासना करते थे वे यह भी दावा नहीं कर सकते थे कि उनके ईश्वर पवित्र हैं। (2) यहोवा **भययोग्य** है और स्तुति के योग्य है। कोई भी मूर्ति उपासना का अधिकार नहीं रखती। (3) मात्र परमेश्वर के पास अद्भुत कार्य करने की ताकत है। मिस्र के झूठे ईश्वर कुछ भी नहीं कर सके, न तो वे अच्छा कर सके और न ही बुरा कर सके;

वास्तव में वे उस प्रकार के अद्‌भुत काम नहीं कर पाए जो यहोवा ने लाल सागर के निकट किए। परमेश्वर ने, दस महामारी के द्वारा इन देवताओं पर न्याय लाते हुए उनकी कमज़ोरी को प्रकट किया (12:12 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयत 12. यह आयत पहले छन्द का समापन *यहोवा ने जो किया है उसके लिए उसकी स्तुति* के साथ करती है। परमेश्वर की सामर्थी ताकत के द्वारा **पृथ्वी ने उनको निगल लिया।** मिस्रियों के विनाश के प्रति कवि के तीन वर्णनों में एक उन्नति देखी जा सकती है। यहोवा ने उनको समुद्र में फेंक दिया (15:4, 5) और ऐसा उसने उन्हें समुद्र में ढाँपने के द्वारा किया जिससे कि वे उसमें डूब जाएँ (15:8-10)। अन्तिम परिणाम यह रहा कि "पृथ्वी ने उनको निगल लिया।" जैसा कि समुद्र "पृथ्वी," का एक भाग है, जब वे समुद्र में डूब गए तब वे पृथ्वी के द्वारा "निगल" लिए गए। अन्य सम्भावना यह है कि "पृथ्वी" "नीचे के लोक का," अथवा "अधोलोक" का संकेत देती है।[12]

दूसरा छन्द (15:13-18)

[13]"अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास-स्थान को ले चला है। [14]देश देश के लोग सुनकर काँप उठेंगे; पलिश्तियों के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। [15]एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे; मोआब के पहलवान थरथरा उठेंगे; सब कनान निवासियों के मन पिघल जाएँगे। [16]उनमें डर और घबराहट समा जाएगी; तेरी बाँह के प्रताप से वे पत्थर के समान अबोल हो जाएँगे। जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तू ने मोल लिया है पार न निकल जाएँ। [17]तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भागवाले पहाड़ पर बसाएगा, यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तू ने अपने निवास के लिये बनाया, और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे प्रभु, तू ने आप ही स्थिर किया है। [18]यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।"

कविता का दूसरा छन्द इस्राएल की ओर से लाल समुद्र पर परमेश्वर के किए हुए काम के परिणामों पर बल देता है। ऊपरी तौर पर, 15:13-16 में, लोगों ने भविष्य में होने वाली बात के लिए इस प्रकार गाया मानो ऐसा हो चुका हो। आर. एलन कोल ने कहा कि इन आयतों में भूत काल सम्भावित रुप से "'भविष्यद्वाणी की परिपूर्णता'" को बता रहा है: भविष्य की घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है जैसे कि वे घटनाएँ हो चुकी हों। आरम्भिक दिनों में यह सामान्य बात थी और पुराना नियम की भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में इसे विशेष रुप से इसी समानता के साथ देखा जा सकता है।"[13] हालांकि सीनै पर्वत पर इस्राएलियों का पहुँचना और लाल सागर पर हुई घटनाओं के कारण इस्राएल के प्रति राष्ट्रों में डर उत्पन्न होना अभी भविष्य में होना बाकी था, फ़िर भी मूसा और इस्राएलियों ने इस प्रकार गाया मानो इस समय वे सीनै के पास हों (जबकि अभी तक वे कनान में नहीं पहुँचे थे) और जैसे कि आस-पास के लोग इस्राएलियों के डर को प्रकट कर रहे हों।

आयत 13. दूसरा छन्द *इस्राएल के लिए परिणामों* के साथ आरम्भ होता है।

इस्राएल के लिए परमेश्वर के छुटकारे का अर्थ था छुटकारा पाना और अपने लोगों को नेतृत्व प्रदान करना। **छुड़ाई हुई प्रजा** के रूप में इस्राएल पर परमेश्वर ने अपनी **करुणा** और **बल** में कार्य किया, जिसमें उसने अपनी दया और ताकत को प्रकट किया। उसने इस्राएल की **अगुवाई** अपने **पवित्र निवास-स्थान** की ओर उन्हें **ले चला**, सम्भावित रुप से यह सीनै पर्वत का एक सन्दर्भ है (देखें व्यव. 33:2; न्यायियों 5:5)। अन्य लोग "पवित्र निवास-स्थान" को कनान देश, वायदे के देश, की ओर संकेत के रुप में देखते हैं जिसका संकेत 15:17 में देखा जा सकता है।[14] NIV में "अगुवाई देगा" और "अगुवाई करेगा," दिया है, जो ये संकेत देते हैं कि भविष्य में ये घटनाएँ होंगी।

आयतें 14-16. ये आयतें *राष्ट्रों के लिए होने वाले परिणामों* की ओर ध्यान केन्द्रित करती हैं। **कनान** के लोगों ने और देश-देश के लोगों (**पलिश्तियों**,[15] **एदोम** और **मोआब**) के लिए कहा गया कि वे यह **सुनकर** कि परमेश्वर ने मिस्रियों के साथ क्या किया, **काँप** उठे (देखें गिनती 22:1-6; यहोशू 2:8-11)। देश-देश के लोग **व्याकुल** हो गए और **डर** गए; वे **काँप** उठे, उनका उत्साह पिघल गया और डर और घबराहट उनमें समा गया। वे **पत्थर के समान अबोल** हो गए थे, जैसे कि वे जम गए हों और उस देश में इस्राएल के प्रवेश को रोकने में वे असमर्थ थे। वे इस स्थिति में तब तक रहे जब तक इस्राएल अपने वायदे के देश में नहीं पहुँच गया। इसके अन्तर में इस्राएल, उस देश में मुक्त रुप से घूमने लगा जैसे कि वे ऐसे **लोग** हों **... जिनको** [परमेश्वर] **ने मोल लिया है**। फ़िर से, NIV भविष्य काल (ऐसा होगा) का प्रयोग करती है जिससे यह बताया जा सके कि ये घटनाएँ अभी तक हुई नहीं हैं। ये आयतें कविता के पहले भाग पर दिए बल की प्रतिध्वनि करती हैं: परमेश्वर अपने शत्रुओं को हरा देता है और अपने लोगों को आशिष देता है।

आयत 17. यह आयत *इस्राएल के परिणामों* की ओर लौट आती है। यह लाल सागर के द्वारा इस्राएल के छुटकारे के अन्तिम परिणाम के बारे में बताती है: परमेश्वर के लोग उस देश में **रोपे** जाएँगे जो वह उन्हें देगा। प्रबल कृषि सम्बन्धी यह चित्रण पुराने नियम में बार-बार देखा आता है, जो कि यहोवा की सर्वोच्चता का प्रदर्शन करता है (2 शमूएल 7:10; भजन 44:2; 80:8; यिर्म. 24:6; 32:41; 42:10; आमोस 9:15)। यहाँ पर देश को रूपान्तरित रुप से **अपने निज भागवाले पहाड़**, उसके अपने **निवास** और वह **पवित्रस्थान** जिसे प्रभु ने आप ही **स्थिर किया है**, के रुप में बताया गया है। ये अलग-अलग तीन प्रकटीकरण एक ही स्थान - वायदे के स्थान-का संकेत देते हैं।[16] लोगों ने यह गीत उत्सव मनाने के लिए गाया कि परमेश्वर ने उन्हें लाल समुद्र से होकर मिस्र से छुड़ा लिया। परमेश्वर उन्हें (भविष्यद्वाणी के रुप में कहते हुए) "पवित्र निवास-स्थान" (15:13), सीनै पर्वत पर ले आया और वह (भविष्य में) अन्त में उन्हें वायदे के देश में ले आएगा।

आयत 18. इस भजन की यह अन्तिम आयत *निष्कर्ष* के रुप में है। यह गीत उसी प्रकार समाप्त होता है जैसे यह आरम्भ हुआ था: यह, **यहोवा** की स्तुति करते हुए समाप्त होता है। स्तुति के ये अन्तिम शब्द यहोवा का चित्रण राजा के रुप में करते हैं - इस्राएल का अपरिवर्तनशील शासक, एक ऐसा राजा जो **सदा सर्वदा**

राज्य करता रहेगा। हालांकि पुराना नियम में "सदा सर्वदा" का अर्थ सदैव वह नहीं होता जैसा कि मसीही लोग इसे "अनन्तता" के रुप में देखते हैं, परन्तु सम्भावित रुप से यह पद यह सुझाता है कि कवि, अनन्तता की धारणा के विषय में कुछ समझ गया है। उसने परमेश्वर की स्तुति इस सच्चाई के लिए की कि वह सदैव अस्तित्व में था और सम्पूर्ण पृथ्वी पर सर्वोच्च जन के रुप में सदैव बना रहेगा।

एक संक्षिप्त कथन (15:19)

[19]यह गीत गाने का कारण यह है, कि फ़िरौन के घोड़े, रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में चले गए, और यहोवा उनके ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया; परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले गए।

आयत 19. गद्य में अन्य संक्षिप्त कथन यह बताते हैं कि इस्राएली लोग किस बात का उत्सव मना रहे थे। वे इसलिए उत्सव मना रहे थे कि परमेश्वर ने **फ़िरौन** की सेना को नष्ट कर दिया था परन्तु **इस्राएलियों** को समुद्र के बीच **स्थल ही स्थल** से होकर निकाल दिया।

मरियम और सब स्त्रियों ने आनन्द मनाया (15:20, 21)

[20]तब हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियाँ डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं। [21]और मरियम उनके साथ यह टेक गाती गई: "यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में फेंक दिया है।"

आयतें 20, 21. इस्राएल के छुटकारे के उत्सव में **सब स्त्रियाँ** शामिल थी जिनकी अगुवाई **मरियम** ने **नाचते** हुए और उसी गीत का एक संस्करण (अथवा उसका एक भाग) **गाते** हुए अगुवाई दी जिसे पुरुषों ने गाया (15:1)। प्राचीन समय में अपने आनन्द को प्रकट करने का एक तरीका नाचना था। वास्तव में आनन्द मनाने के लिए इस्राएलियों के पास एक अच्छा कारण था।[17] बाद में इस्राएल के इतिहास में स्त्रियाँ उन पुरुषों से भेंट करने के लिए शहरों से बाहर आती थी जो युद्ध में विजयी होते थे; वे गाते हुए, नाचते हुए और डफ़ और अन्य वाद्य यन्त्रों की ध्वनि के साथ उनका अभिवादन करती थीं (न्यायियों 11:34; 1 शमूएल 18:6-8)।

आयत 20 में मरियम को **नबिया** कहा गया है। पुराने नियम में पाई जाने वाली कुछ ही नबिया में से एक नाम मरियम है।[18] सामान्य रूप से एक नबी उसे कहा जाता है जो किसी अन्य के लिए बोलता है। परमेश्वर का एक नबी परमेश्वर के लिए बोलता है अथवा परमेश्वर की प्रेरणा से बोलता है। सम्भावित रुप से मरियम भी इसी अर्थ में एक नबिया थी। सम्भावित रुप से परमेश्वर ने उसे सन्देश दिए होंगे जिससे कि वह उन्हें लोगों तक पहुँचा दे। हो सकता है कि परमेश्वर ने यह कविता मरियम पर प्रकट की हो।[19]

मारा में खारा पानी मीठा बना दिया गया (15:22-25)

[22]तब मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नाम जंगल में आए; और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला। [23]फिर मारा नामक एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ का पानी खारा था, उसे वे न पी सके; इस कारण उस स्थान का नाम मारा पड़ा। [24]तब वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध बकबक करने लगे, "हम क्या पीएँ?" [25]तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसे एक पौधा बतला दिया, जिसे जब उसने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। ...

अपने उद्धार का उत्सव मनाने के बाद इस्राएलियों ने पहले सीनै और उसके बाद वायदे के देश तक की अपनी लम्बी यात्रा को आरम्भ किया। सीनै की ओर अपनी यात्रा के वर्णन में, जैसा कि 15:22-18:27 में कहानी का रिकॉर्ड रखा गया है, दो सच्चाइयों पर बल दिया गया है: (1) इस्राएलियों ने प्रत्येक बात में शिकायत की। बार-बार उन्होंने अपने भूलने और कृतज्ञता के स्वभाव का प्रमाण दिया।[20] (2) परमेश्वर ने इस्राएल की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया। उनकी कृतज्ञता के लिए दण्ड देने के स्थान पर परमेश्वर ने उनके कुड़कुड़ाने को सहा और उनके निवेदनों के प्रति अनुग्रह के साथ प्रत्युत्तर दिया।

आयत 22. इस्राएली लोग **लाल समुद्र** से आगे निकल आए और वे **शूर नाम जंगल में** आए। यह प्रांत "एताम नामक जंगल" (गिनती 33:8) भी कहलाता है। उन्होंने **तीन दिन तक** जंगल में यात्रा की जो फ़िरौन के सम्मुख मूसा के मूल निवेदन का स्मरण कराता है जिसमें उसने "तीन दिन की यात्रा" (3:18; 5:3; 8:27) के लिए निवेदन किया था। इसी समय में, फ़िर भी, उन्हें **पानी** का कोई सोता नहीं मिला।

आयत 23. इस्राएलियों की शिकायत करने का पहला अवसर **मारा** में रहा। जब वे वहाँ पर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि **पानी खारा था,** इसलिए **उसे वे न पी सके**। **मारा** नाम का अक्षरशः अर्थ "कड़ुवापन" है।[21] हो सकता है कि इस्राएलियों के वहाँ पहुँचने से पहले वह स्थान इसी प्रकार जाना जाता हो,[22] परन्तु इसने यह नाम इस घटना के कारण शायद इस समय पाया। सम्भावित रुप से यह मात्र इस्राएलियों के द्वारा ही "मारा" के रुप में जाना जाता है।[23]

आयतें 24, 25. इस कारण, इस्राएलियों ने **मूसा** (देखें 16:2; 17:3) के विरुद्ध **बकबक करने लगे** अथवा उससे शिकायत की ("कुड़कुड़ाए"; KJV)। मूसा ने, बदले में, **यहोवा की दोहाई दी**, और लोगों की ओर से परमेश्वर से निवेदन किया। यहोवा ने उसकी प्रार्थना का उत्तर देते हुए एक **पौधा** बतलाया कि वे उसे काटें और जब उन्होंने उसे **पानी में डाला** तो वह **मीठा** हो जाए।[24] उस पौधे ने चाहे समस्या का एक "प्राकृतिक" निवारण उपलब्ध करवाया हो अथवा पानी को मीठा करने का परमेश्वर का यह "दिव्य" (चमत्कारी) चिन्ह रहा हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। यहाँ पर सन्देश यह है कि परमेश्वर अपने लोगों की चिन्ता करता है और उसने

पीने के लिए उन्हें पानी उपलब्ध करवाया।

मारा में वाचा का एक पूर्व दर्शन (15:25-27)

25... वहीं यहोवा ने उनके लिये एक विधि और नियम बनाया, और वहीं उसने यह कहकर उनकी परीक्षा की, 26"यदि तू अपने परमेश्‍वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।" 27तब वे एलीम को आए, जहाँ पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे; और वहाँ उन्होंने जल के पास डेरे खड़े किए।

आयतें 25, 26. मारा में यहोवा ने इस्राएल को उस वाचा का पूर्व दर्शन दिया जो वह उन्हें सीनै पर्वत पर देने वाला था। ऊपरी तौर पर परमेश्वर आरम्भ से यह चाहता था कि वे जान लें कि परमेश्वर के लोग होने के कारण वह उनसे क्या चाहता है और उनके परमेश्वर के रुप में वे उससे क्या अपेक्षा कर सकते हैं।

विधि और नियम, उसी अर्थ में समानता रखते है जिनके द्वारा आयत 25 में **उसने उनकी परीक्षा की**। उनकी "परीक्षा" की गई इसका अर्थ है कि उनसे कहा गया कि वे परमेश्वर की विधियों को स्वीकार करें और उनको मानें। अन्य सम्भावना यह है कि "खारे पानी" के सम्बन्ध में मारा में उनकी "परीक्षा" की गई और वे इस परीक्षा में असफ़ल रहे। फ़िर भी, पहली व्याख्या अधिक उपयुक्त लगती है। आर. एलन कोल ने इस प्रकार समझाया, "यह सम्भव है ... कि आयत 26 में 'परीक्षा' शब्द, वायदे की नियमबद्ध प्रकृति की ओर संकेत कर रहा हो ... परमेश्वर की आशिष उसके बच्चों की आज्ञाकारिता पर निर्भर रहते हुए सदैव उसकी प्रकाशित इच्छा के अनुसार होती है।"[25]

आयत 26 में शब्दों का विशेष विवरण दिया गया है। उन्हें यह चाहिए था कि वे **परमेश्वर** की आज्ञा मानें: उसके वचन को **सुनें**, और जो **उसकी दृष्टि में ठीक है वही करें** और **उसकी आज्ञाओं** पर कान लगाएँ, और **उसकी सब विधियों को मानें**। इसके बदले में, परमेश्वर ने जितने रोग **मिस्रियों पर भेजे उनमें से एक भी उन पर न भेजते** हुए उन्हें आशिष देगा। वास्तव में, **यहोवा** ने कहा कि वह उनका **चंगा करनेवाला** यहोवा परमेश्वर है; वह उन्हें चंगा करेगा और अगर वे उसकी आज्ञा मानते हैं तो वह उन्हें हानि नहीं पहुँचाएगा।

सामान्य रुप में, यह प्रारम्भिक वाचा उस वाचा के समान है जो परमेश्वर इस्राएल के साथ सीनै पर स्थापित करेगा। अगर इस्राएली लोग, यहोवा की आज्ञा मानेंगे तो यहोवा उन्हें आशिष देगा। फ़िर भी, जितने रोग मिस्रियों पर भेजे गए "उनमें से एक भी रोग" इस्राएलियों को "पीड़ा नहीं देंगे," इस वायदे से बहुत अधिक अर्थ निकाले जा सकते हैं।। इस सन्दर्भ में, यहोवा सम्भावित रुप से उस हानि के बारे में बात कर रहा था जो महामारियों के द्वारा वह मिस्रियों पर लाया जिसमें

बाद में लाल समुद्र पर उनका विनाश हो गया।[26] अगर लोग "कान लगाकर यहोवा की सुनें" तो इस्राएल इस प्रकार का अनुभव नहीं करेगा। जबकि पुराने नियम की विधियाँ इस्राएल को कुछ रोगों से बचाने की ओर झुकाव के साथ थीं, फ़िर भी इस्राएल को यह गारन्टी नहीं दी गई कि अगर वह देश (अथवा उसके लोग) आज्ञा मानते हैं तो उनमें से कोई भी रोगी नहीं होगा।

आयत 27. यह अध्याय एक आनन्दित नोट के साथ समाप्त होता है। तब लोग **एलीम को आए, जहाँ पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे**। अन्य शब्दों में, अथाह भोजन और पानी वहाँ पर था। मारा के खारे पानी के बाद एलीम स्वर्ग के समान लग रहा था।

अनुप्रयोग

हम गा रहे हैं क्योंकि हम छुड़ा लिए गए हैं (15:1-21)

जिस प्रकार इस्राएलियों ने गाया क्योंकि वे बचा लिए गए थे (15:1-21), इसी प्रकार जो स्वर्ग में हैं वे भी "मूसा का गीत गाएँगे ... और मेम्ने का गीत गाएँगे" (प्रका. 15:3) क्योंकि वे छुड़ा लिए गए। वर्तमान के मसीही लोगों को चाहिए कि वे "परमेश्वर के प्रति अपने मन में धन्यवाद" के साथ गाएँ (कुलु. 3:16; देखें रोमियों 15:9; इफ़ि. 5:19, 20; इब्रा. 13:15)।

परमेश्वर का स्वभाव (15:1-18)

परमेश्वर के स्वभाव पर एक पाठ को यह शीर्षक दिया जा सकता है: "यह मेरा परमेश्वर है" (15:2) अथवा "तेरे तुल्य कौन है?" (15:11)। छुटकारे का गीत (15:1-18) यहोवा के अनेक विवरण उपलब्ध करवाता जो कि एक सन्देश का आधार है कि परमेश्वर किसके समान है। इस पाठ्य के अनुसार, परमेश्वर (1) अपने लोगों का सामर्थ है, (2) अपने लोगों का गीत है और (3) अपने लोगों का उद्धार है। वह (4) एक योद्धा है, (5) यहोवा परमेश्वर है, (6) छुड़ानेवाला है, (7) ताकत में महाप्रतापी, (8) अपने शत्रुओं पर विजय पाने वाला, और (9) प्रकृति को नियंत्रित करने वाला है। परमेश्वर (10) अद्‌भुत है; किसी भी देवता से उसकी तुलना नहीं की जा सकती। वह (11) पवित्रता में महाप्रतापी है, (12) स्तुति में भययोग्य है, (13) अद्‌भुत काम करने वाला, (14) एक अगुवा और (15) अपने लोगों को छुड़वानेवाला है, और (16) सब का राजा है। "यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा" (15:18)।

यहोवा "योद्धा" है (15:3; KJV)

"योद्धा" के रुप में यहोवा अपने शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता है। छुटकारे का गीत इस बात की घोषणा करता है कि वह सदैव युद्ध में जीतता है; वह अपने शत्रुओं पर सदैव विजयी रहता है। आइए इस बात का निश्चय करें कि हम उसके शत्रु नहीं

हैं जिससे वह हमें नष्ट न करे! परमेश्वर के साथ अपनी शत्रुता छोड़ दें; "परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो" (2 कुरि. 5:20)।

खारा पानी, मीठा बना दिया गया (15:23-25)

सम्भावित रुप से मसीही लोग "खारे पानी" का - परखे जाने के समय, परीक्षाएँ और व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करेंगे। अगर हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं तो वह हमारे जीवन को "मीठा" बना सकता है। वह परिस्थितियों को परिवर्तित कर देगा अथवा परिस्थितियों के प्रति हमारे व्यवहार को परिवर्तित कर देगा, नाओमी ने कहा कि वह अब आगे "नाओमी" ("सुहावना") कहलाने के योग्य नहीं है, परन्तु "मारा" ("कड़वा") कहलाने के योग्य है (रूत 1:20, 21)। रूत की पुस्तक के अन्त में, फ़िर भी नाओमी फ़िर से परमेश्वर के द्वारा आशीषित हुई (रूत 4:14-17)। अगर हम परमेश्वर में भरोसा रखते हे तो वह ऐसा कर देगा कि सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करेंगी (रोमियों 8:28)।

यहोवा तुम्हारा चंगा करनेवाला परमेश्वर है (15:26)

यहोवा परमेश्वर लोगों को शारीरिक चंगाई देता है, यहाँ तक कि उस समय भी जब वह चमत्कारी रुप से कार्य नहीं करता। डॉक्टर और दवाएँ चंगाई के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हैं, परन्तु परमेश्वर वास्तविक चंगाई प्रदान करता है। परमेश्वर तीन तरीकों से भी चंगा कर सकता है: वह हमारे टूटे मन को और घाव से भरी हमारी आत्मा को चंगा कर सकता है; वह हमें सम्पूर्ण रुप से भावुक बना सकता है। इन सबके ऊपर, यहोवा परमेश्वर पाप के खतरनाक रोग से बीमार, नरक की ओर जा रहे हमारे प्राण को चंगा कर सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]नहूम एम. सारना, *एक्सोडस,* द जेपीएस टोरा कॉमेन्ट्री (न्यू यॉर्क: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसाईटी, 1991), 76. [2]उपरोक्त, 75. [3]"एक विचार था कि जो वाक्यांश मूसा आरंभ करता था लोग उसे दोहराते थे या पूरा करते थे। एक अन्य धारणा थी कि उन के द्वारा बारी-बारी से पद गए जाते थे। एक और मान्यता थी कि मूसा के गा लेने के पश्चात लोग संपूर्ण गीत को गाते थे।" (उपरोक्त, 76)। एक और संभावना है कि मरियम तथा स्त्रियों ने कोरस गाया (15:21) प्रत्येक एक या दो पंक्ति के बाद। [4]उपरोक्त, 75. [5]एस. आर. ड्राइवर, *द बुक ऑफ एक्सोडस,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल एण्ड कौलेजिस (कैम्ब्रिज: यूनीवर्सिटी प्रैस, 1953), 129. [6]यद्यपि NASB कविता को छंदों में विभाजित नहीं करती है, अन्य अनुवाद करते हैं, चाहे वे विभाजन के स्थान में भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, NIV कविता को निम्न छंदों में विभाजित करती है: 15:1-5, 6-8, 9-10, 11-12, 13-18; NKJV इनमें, 15:1-10, 11-13, 14-17, 18; NRSV में, 15:1-3, 4-10, 11-12, 13-18; NCV में, 15:1-8, 9-10, 11-13, 14-18. यह निर्धारित करना कठिन है कि पद 13 पहले छंद में आता है या दूसरे में। [7]उदाहरण के लिए, यह विचार कि कविता एकल है, जौन आई. डरहम के विचार की तुलना में है, जिन्होंने कहा, "यह कविता कम से कम दो ... या संभवतः तीन ... कविताओं का संयोजन है" (जौन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 [वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987], 205)। [8]नहूम एम. सर्ना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरिजिन्स ऑफ़ बिब्लिकल*

इस्राएल (न्यु योर्क: स्कोकेन बुक्स, 1996), 113-14. [9]जॉन एच. वॉल्टन एण्ड विक्टर एच. मैथ्युस, *जेनेसिस-ड्युट्रोनोमी*, द आइवीपी बाइबल बेक्ग्राउन्ड कमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रेस, 1997), 101. [10]परमेश्वर वास्तव में कोप का अथवा पलटा लेने वाला परमेश्वर है: "'बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा'" (रोमियों 12:19; देखें व्यव. 32:35; भजन 94:1)।

[11]कवि यहाँ पर बातों की छँटनी करता है; वह मात्र कविता को फ़िर से नहीं सुना रहा था. गायक (और बाद में पाठकों) को पहले से कहानी की जानकारी थी. अतः उसने यह सच्चाई नहीं बतायी कि इस्राएली लोग पूर्व में समुद्र से पार हो गए थे। [12]विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 324; सर्ना, *एक्सोडस*, 80. [13]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 125. [14]जेम्स बर्टन कोफ़मैन, *कमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकिन्ड बुक ऑफ़ मोज़स* (अबिलीन, टेक्सस: एसीयू प्रेस, 1985), 208. [15]इस सन्दर्भ में पलिश्तीन पर बातचीत कभी-कभी कालभ्रम के रुप में मानी जाती है (13:17 पर टिप्पणियाँ देखें). [16]मार्टिन नोथ, *एक्सोडस*, ट्रान्स. जे. एस. बाओडन, द ओल्ड टेस्टामेन्ट लाइब्रेरी (फ़िलाडेलफ़िया: वेस्टमिनिस्टर प्रेस, 1962), 126. [17]जिस नाच में मरियम और सब स्त्रियाँ शामिल थी वह आधुनिक नाच के समान नहीं था. न ही गीत गाने के समय उनका नाचना और डफ़ का प्रयोग करना कोई उदाहरण है जो आज की कलीसिया में आराधना में नाचने अथवा वाद्य यन्त्रों के प्रयोग को उचित ठहराता हो। (कोफ़मैन, 210-11.) [18]अन्य, दबोरा (न्यायियों 4:4); हुल्दा (2 राजा 22:14); नोअद्याह, एक झूठी नबिया (नहेम्य. 6:14); और यशायाह की पत्नी (यशा. 8:3) थी। [19]संगीत और भविष्यद्वाणी प्रायः पुराना नियम से जुड़े हुए थे, जैसा कि कभी-कभी "संगीत का प्रयोग इसलिए किया जाता था कि इससे नशे जैसी स्थिति को उकसाया जा सके जिससे भविष्यद्वाणी के कथन निकलते हैं (1 शमूएल 10:5; 2 राजा 3:15)" (वॉल्टन एण्ड मैथ्युस, 102)। [20]"बड़बड़" (לוּן, *लुन)* के लिए एक विशेष शब्द पुराना नियम के सात अध्यायों में पाया गया है: निर्गमन 15; 16; 17; गिनती 14; 16; 17; यहोशु 9. (हैरी एम. ओर्लिन्सकी, *नोट्स ऑन द न्यु ट्रान्सलेशन ऑफ़ टोराह* [फ़िलाडेल्फ़िया: जूइश पब्लिकेशन सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका, 1969], 171; कोफ़मैन में दिया गया है, 212.)

[21]रुत की पुस्तक में, नाओमी जब अपने पति और पुत्रों को खोने के बाद यरुशलेम लौटी तब उसने कहा कि उसका नाम "मारा" पड़ना चाहिए (रुत 1:20)। कोल के अनुसार, "गन्धरस" शब्द उसी मूल शब्द से प्राप्त होते हुए लगता है। (कोल, 128.) [22]उपरोक्त। [23]एक ही घटना के लिए हो सकता है कि अलग-अलग लोग इस एक ही घटना के लिए अलग-अलग नाम दें, हो सकता है कि दो सेनाएँ एक ही युद्ध को अलग-अलग नाम से बुलाएँ और अलग-अलग नाम एक ही स्थान की ओर संकेत करते हों। [24]लेखक यह अनुमान लगाते हैं कि यह पौधा किस प्रकार का होगा और किस प्रकार इसने पानी के खारे स्वाद को परिवर्तित कर दिया होगा. एक अच्छा विचार-विमर्श कोल में दिया हुआ है, 129. इसी समान एक कहानी भविष्यद्वक्ता एलीशा को शामिल करती है (2 राजा 2:19-22)। [25]उपरोक्त। [26]कोल ने कहा कि "ये बिमारियाँ" "सामान्य रुप में महामारियों के प्रति पहले स्थान में आती हैं, परन्तु विशेष रुप से, जल को लहू बनाने के स्थान में आती है जिसने इसे पीने योग्य नहीं रहने दिया," की ओर संकेत करती हैं। (उपरोक्त।)